विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

# सरस्वती शिशु मन्दिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा

ई- पत्रिका अंक- 54, अप्रैल -2025

☎ 0120-4545608 WEBSITE: ssmnoida.in GMAIL: ssm.noida@gmail.com

# विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

## सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर – 12, नोएडा

मासिक ई-पत्रिका, *अप्रैल* – 2025

# ज्ञानोदय (अंक-54)

### संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता

श्री प्रदीप भारद्वाज

कृष्ण कुमार बंसल जी

राजीव नाइक जी

नितीश आर्य जी

जितेन्द्र कुमार गौतम जी

सुशील कुमार जी

### मार्गदर्शक

श्री देवेन्द्र जी (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

### संपादक

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

### संपादक मंडल

श्री दीपक कुमार

ब॰अन्नु सिंह

# अनुक्रमणिका


- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- पत्रिका हेतु सुझाव व विचार
- लेख (उत्सव, जयन्ती व दिवस)
- विश्व श्रमिक दिवस
- रविन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती
- महाराणा प्रताप जयन्ती
- राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस
- वीर सावरकर जयन्ती
- अहिल्याबाई जयन्ती
- महावीर जयन्ती
- डॉ अम्बेडकर जयन्ती
- आचार्य-अभिभावक गोष्ठी
- अभिभावक प्रबोधन कार्यक्रम
- विश्व पुस्तक दिवस
- परशुराम जयंती
- स्विमिंग डे
- जन्मोत्सव हवन
- पत्रिका प्रश्नोत्तरी
- वर्ग पहेली

# संपादकीय

शिक्षा एक दीपक है, जो अज्ञानता के अंधकार को मिटाकर जीवन को प्रकाशमय बनाती है। यह केवल किताबों में लिखे शब्दों को पढ़ने तक सीमित नहीं होती, बल्कि सोचने, समझने और एक बेहतर इंसान बनने की कला सिखाती है। विद्यार्थियों के जीवन में शिक्षा वह बीज है, जिससे एक सुनहरा भविष्य पनपता है।

हमारे सरस्वती शिशु मंदिर परिवार में भैया/ बहिनों को अंक ज्ञान व अक्षर ज्ञान की शिक्षा के साथ उन्हें जीवन जीने की कला भी सिखाई जाती है। यह वह स्थान है जहाँ एक नन्हा बालक, एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार होता है।

विद्यालय का माहौल विद्यार्थियों को शिक्षा के प्रति आकर्षित करता है। पुस्तकालय, विज्ञान प्रयोगशालाएँ, खेल मैदान और सांस्कृतिक गतिविधियाँ — ये सभी छात्रों को एक समग्र शिक्षा प्रदान करते हैं। जहाँ पढ़ाई के साथ-साथ रचनात्मकता और व्यावहारिक ज्ञान भी विकसित होता है।

विद्यालयों में समय-समय पर होने वाले भाषण प्रतियोगिता, निबंध लेखन, विज्ञान मेले, पुस्तक मेले और मोटिवेशनल सेमिनार विद्यार्थियों को शिक्षा की अहमियत समझाते हैं। जब छात्रों को मंच पर बोलने का अवसर मिलता है, या उनकी मेहनत को सराहा जाता है, तो उनमें पढ़ाई के प्रति उत्साह और बढ़ता है।

विद्यालय समय-समय पर होने वाली PTM के माध्यम से विद्यार्थियों के माता-पिता के साथ भी नियमित संवाद बनाए रखता है। अभिभावकों की सहभागिता से छात्रों को घर और स्कूल, दोनों जगह एक समान प्रेरणा मिलती है।

'ज्ञानोदय' पत्रिका के माध्यम से हम अपनी संस्कृति, शिक्षा, सहिष्णुता तथा समावेशी स्वभाव रखते हुए हमारे शिशु मंदिर परिवार का छोटा समाज धर्म के मार्ग पर चलते हुए एक वृहद समाज को भी विवेकशील बनाते हुए उत्कृष्ट नागरिकों के रूप में राष्ट्र के सार्वभौमिक विकास के पताका को ऊँचा लहराता रख सके, ऐसी आशा और विश्वास है।

**अन्नु सिंह**

**(अंक संपादक)**

# प्रधानाचार्य जी की कलम से

भैया/बहिनों के पालन-पोषण में परिवार की अहम भूमिका होती है। जन्म से ही, यह समाजीकरण की पहली इकाई है जिसके संपर्क में बच्चा आता है और वह ऐसा माहौल और अनुभव प्रदान करता है जो उन्हें समाज में काम करने के लिए आवश्यक कौशल और मूल्यों को विकसित करने में मदद करता है। हम घर पर क्या सिखाते हैं और हम अपने बच्चों को कैसे प्रोत्साहित करते हैं, इसका असर उनके संवाद करने, सीखने और दूसरों से संबंध बनाने के तरीके पर पड़ता है।

माता-पिता को अपने बच्चों के साथ खेल खेलकर, पहेलियाँ हल करके, कुछ क्रियात्मक खेल खेलकर, उन्हें पढ़कर, सुनाकर या उनके साथ बाहरी गतिविधियाँ करके उनके साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

बच्चे और युवा अपने माता-पिता से जो सबसे ज़्यादा चाहते हैं वह है, "समय" वे उम्मीद करते हैं कि उनकी बात सुनी जाए और उनका ख्याल रखा जाए; "मैं तुमसे प्यार करता हूँ", "मुझे तुम पर गर्व है" प्यार के ये वचन ऑक्सीटोसिन नामक हार्मोन पैदा करता है, जो तनाव को कम करता है और प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाता है।

यद्यपि स्कूल में जो सिखाया जाता है वह बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन यह वह सामाजिकीकरण और मूल्य हैं जो एक बच्चे को उसके परिवार से प्राप्त होते हैं जो उसके चरित्र और व्यवहार को आकार देते हैं और एक सफल भविष्य के लिए एक ठोस नींव रखते हैं।

देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)

सरस्वती शिशु मन्दिर, नोएडा

# पत्रिका हेतु सुझाव व विचार

यह पत्रिका न केवल छात्रों के लिए बल्कि अभिभावकों के लिए भी अद्भुत काम कर रही है। समय बीतने के साथ, मुझे लगा कि हमने अपने अभिभावकों और शिक्षकों से अधिक सीखा है और हम अपने बच्चों को कम सिखा रहे हैं। हम अपनी संस्कृति भूलते जा रहे हैं। जब मुझे ई-पत्रिका का पहला अंक मिला, तो मैंने पाया कि शिक्षकों द्वारा लिखे गए लेख बहुत ही रोचक थे। इसके अलावा, सबसे रोचक हिस्सा अंतिम पृष्ठ था, जिसमें प्रश्नोत्तरी थी।

वास्तव में, मुझे भी कुछ प्रश्नों के उत्तर नहीं पता थे। मैं अब पत्रिका का इंतजार करता हूं ताकि मैं खुद को बेहतर बना सकूं। ई-पत्रिका अपने आप में एक संपूर्ण पैकेज है, लेकिन बेहतर होगा कि इसमें इतिहास और हिंदी से संबंधित कुछ और प्रश्न हों।

**पवन त्यागी**

**अर्नव त्यागी- 5 A**

---

मैं आपके पाठ्यक्रम और शिक्षण-प्रशिक्षण से प्रभावित हूँ जो अन्य विद्यालयों से अलग है। ई-पत्रिका में अच्छी तरह से योजनाबद्ध प्रश्नोत्तर कार्यपत्रक मेरे बच्चे को निर्धारित पाठ्यपुस्तकों से परे सोचने में सक्षम बनाता है।

बच्चों के लिए स्कूल में गर्मी में ठन्डे पानी की व्यवस्था हो जाये बहुत अच्छा होगा और गर्मी में खेलने के लिए एक छांव वाली जगह बनायीं जाये ताकि बच्चे गर्मी से बचे रहे।

**नेहा गुप्ता**

**जीविशा जायसवाल- 5 A**

**स्मार्ट क्लासरूम की सुविधा –** बच्चों को डिजिटल माध्यम से पढ़ाई करवाने के लिए स्मार्ट बोर्ड और प्रोजेक्टर का उपयोग किया जाए।

**पुस्तकालय का विस्तार –** विद्यार्थियों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए विविध विषयों की किताबों से भरपूर एक आधुनिक पुस्तकालय बनाया जाए।

**योग और ध्यान कक्षा –** बच्चों के मानसिक विकास व एकाग्रता बढ़ाने के लिए नियमित योग व ध्यान सत्र आयोजित किए जाएं।

**शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला –** नई शिक्षण तकनीकों और स्किल्स को अपनाने हेतु शिक्षकों के लिए नियमित वर्कशॉप्स कराई जाएं।

**प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा –** बच्चों को व्यवहारिक ज्ञान देने के लिए प्रोजेक्ट व एक्टिविटी आधारित शिक्षा पर बल दिया जाए।

**पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम –** पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान आदि गतिविधियाँ की जाएं।

**अभिभावक–शिक्षक संवाद –** बच्चों की प्रगति हेतु नियमित रूप से अभिभावकों के साथ संवाद बैठकें आयोजित की जाएं।

**खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रम –** बच्चों की प्रतिभा निखारने के लिए विभिन्न खेलों व सांस्कृतिक आयोजनों का आयोजन किया जाए।

**शुभ करन मिश्रा**
**शिवांश मिश्रा- 5 B**

---

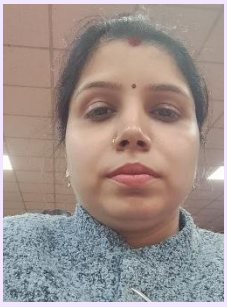

मेरा बेटा सरस्वती शिशु मंदिर में पढ़ता है और विद्यालय बच्चों के विकास में सराहनीय कार्य कर रहा है, किंतु कुछ छोटे-छोटे सुधारों से इसे और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। सबसे पहला सुझाव यह है कि विद्यालय में स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाए। शौचालयों और पीने के पानी की व्यवस्था को नियमित रूप से साफ किया जाए, ताकि छात्र-छात्राएं स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण में पढ़ाई कर सकें। दूसरा सुझाव यह है कि पाठ्यक्रम के साथ-साथ सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों जैसे कि कला, संगीत, खेलकूद, नृत्य और विज्ञान प्रतियोगिताओं को भी महत्व दिया जाए। इससे विद्यार्थियों की छुपी हुई प्रतिभा को उजागर करने का अवसर मिलेगा।

तीसरा सुझाव है कि विद्यालय में एक सुसज्जित पुस्तकालय की व्यवस्था की जाए जहाँ छात्र अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न विषयों की पुस्तकें पढ़ सकें। इससे उनके ज्ञान में वृद्धि होगी और पठन-पाठन के प्रति रुचि भी बढ़ेगी। चौथा सुझाव है कि विद्यालय में करियर मार्गदर्शन और मानसिक परामर्श केंद्र की स्थापना की जाए, जिससे छात्र अपने भविष्य की योजना सही ढंग से बना सकें और मानसिक तनाव से भी मुक्त रहें।

अंत में, शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण तकनीकों की प्रशिक्षण दिया जाए, जैसे स्मार्ट क्लास, ऑडियो-विजुअल माध्यम और प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा। इससे पढ़ाई को रुचिकर और प्रभावी बनाया जा सकेगा। उपरोक्त सभी सुझाव विद्यालय के समग्र विकास में सहायक सिद्ध हो सकते हैं और विद्यार्थियों को एक बेहतर शैक्षणिक वातावरण प्रदान कर सकते हैं।

**रिशु त्रिपाठी**
**अर्णव त्रिपाठी 5th B**

**I think the school is good for my child.**
**Overall, my child has progressed**
**My child is very happy, the teaching staff are very good at nurturing and developing the children's academic skills as well as social interaction and productive play.'**
**'I love this school, keep it up, good teachers – you guys are so welcoming.**
**My child and I are happy with his progress in Year 2, his teachers are lovely**
**My child has had some ups and downs in year, but his teacher and the school have helped.'**
**School environment is so wonderful for my child they learning very good habits and behavior.**

**VIJAY KUMAR MISHRA**
**Anshuman- 5 C**

---

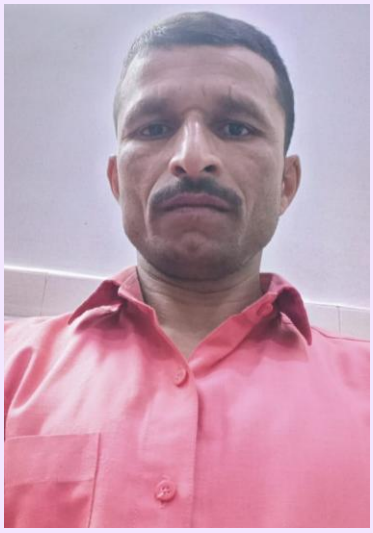

सरस्वती शिशु मंदिर प्रत्येक छात्र में सीखने के प्रति प्रेम, दूसरों के प्रति ईमानदारी,सम्मान. आत्म अनुशासन की भावना को विकसित करता है। इस विद्यालय में संस्कृति औऱ मूल्यों को बढावा दिया जाता है।

छात्रों को उनकी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने को प्रेरित किया जाता है। यहां अनुशासन और जिम्मेदारी भी सिखाई जाती है।

सरस्वती शिशु मन्दिर में अभिभावक और विद्यालय का भी सम्पूर्ण सहयोग रहता है। शिक्षा के साथ -साथ संस्कारों का भी विकास किया जाता है।

**राजेश पाल**
**कार्तिक- 5 C**

मैं सरस्वती शिशु मंदिर सेक्टर 12 नोएडा स्कूल के बारे में विचार प्रकट करना चाहती हूं। जब से मैंने अपने बेटे का दाखिला इस स्कूल में करवाया है, इसके आत्मविश्वास में बहुत वृद्धि हुई है।

मुझे इस स्कूल की यह बात बहुत पसंद आई कि यहां पढ़ाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों पर भी ध्यान दिया जाता है, और बच्चों को अपने राष्ट्र और संस्कृति के बारे में बताया जाता है। जिससे उनके मन में राष्ट्र एवं संस्कृति के प्रति प्रेम की भावना आती है।

साथ-साथ यहां के अध्यापकों का स्वभाव बच्चों और अभिभावकों के प्रति बहुत विनम्र है, जिससे बच्चों के मन में अध्यापक के प्रति सम्मान की भावना आती है।

इस स्कूल की और भी बहुत सारी विशेषताएं हैं जैसे संपन्न विधि, जिसके द्वारा बच्चों के मन में दूसरों की मदद करने की भावना आती है ।

मीना पांडे

आयुष पांडे-5 D

---

सरस्वती शिशु मंदिर में मेरा अनुभव बहुत अच्छा रहा। इस विद्यालय के सभी शिक्षक और शिक्षिका बहुत अच्छे हैं। वे बच्चों को प्यार से पढ़ाते हैं। वह उनकी मदद भी करते हैं। यहां के बच्चों को नई-नई बातें सीखने को मिलती हैं। विद्यालय में अनुशासन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। बच्चों को पढ़ाने के साथ-साथ खेलकूद और अन्य गतिविधियों में भाग लेने का मौका भी यहां पर बहुत मिलता है। यहां के सभी शिक्षक बहुत अनुभवी हैं। विद्यालय में होने वाली प्रतियोगिताओं से बच्चों का उत्साह बना रहता है, साथ ही उन्हें प्रतियोगिताओं से वंचित नहीं किया जाता है। उन्हें प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। बच्चों को विद्यालय में आने के समय और जाने के समय जो संस्कार व बातें सिखाई जाती हैं, वह बच्चों के लिए बहुत अच्छी सिद्ध होती हैं। मुझे इस बात पर बहुत गर्व है कि हमने अपने बच्चों का एडमिशन इस विद्यालय में करवाया।

कविता शर्मा

अनंत भारद्वाज- 5 D

सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय एक संस्कारक्षम वातावरण प्रदान करता है। जिसमें बालकों का सर्वांगीण विकास होता है । प्रातः काल संगीतमय वंदना के साथ योग-प्राणायाम, जन्मदिवस एवं राष्ट्रगीत (वंदे मातरम) बच्चों के क्रियाकलाप बहुत ही उत्तम एवं सराहनीय है। मेरा बेटा कार्तिक नर्सरी कक्षा से शिक्षा ग्रहण करके आज पंचम कक्षा में पहुंच गया है। उनके व्यवहार में यह सब संस्कार दिखाई देते हैं। आगे भी बच्चों को नवीन तकनीकियों एवं प्रयोग के माध्यम से आगे बढ़ाने में और सक्षम होंगे।

**त्रिलोकी नाथ गोस्वामी**

**कार्तिक गोस्वामी- 5th E**

---

हम बड़े सौभाग्यशाली हैं कि हमारे बच्चे ऐसी जगह शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं जहां बच्चों का संपूर्ण विकास एवं बच्चों के विकास के लिए भिन्न-भिन्न कार्यक्रम कराए जाते हैं। जिससे बच्चों का मनोबल बढ़ता है उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है।

वास्तव में यही विकास है। बच्चों का बोलना, उठना, बैठना, चलना, सुनना एवं सम्मान का भाव बच्चों के स्वभाव में दिखाई देता है। हमारे बच्चे पिछले आठ साल से (नर्सरी से पंचम )पढ़ रहे हैं, और हमें कोई भी शिकायत व परेशानी नहीं है। हमें यहां पर अपने बच्चों के हुनर को देखने का अवसर प्राप्त होता है वार्षिक समारोह में हमें दिखाया की स्कूल सिर्फ पढ़ाई के बारे में ही नहीं सोचते बल्कि यहां हमारे बच्चों को हर क्षेत्र में आगे ले जाने के बारे में सोचते हैं।

और इसलिए हम सरस्वती शिशु मंदिर और यहां के सभी अध्यापक गणों को धन्यवाद करते हैं । आगे भी इसी प्रकार हम अपेक्षा करते हैं कि कमजोर बच्चों को भी कार्यक्रमों के माध्यम या अन्य गतिविधियों से आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे ।

**प्रद्युम्न कौशिक**

**भवी कौशिक 5th E**

सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा, एक स्कूल ही नहीं बल्कि एक संस्कार शाला है, जहां बच्चों का मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक और बौद्धिक विकास भी होता है। सही मायने मे यहां बच्चे संस्कारवान एवं ओजस्वी बनते है। यहां के बच्चे धैर्यवान होने के साथ एक-दूसरे के सहायक होते हैं और शिक्षा में भी हमेशा आगे रहते है। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ़चढ कर हिस्सा लेते हैं। यहां प्रत्येक बच्चों में देशभक्ति और समाज के प्रति स्नेह की भावना विकसित होती है। हमारी दोनों बेटियां दिव्या और काव्या कुछ वर्षों से यहां विद्या ग्रहण करती आ रही हैं। इन वर्षों में उनके अंदर शालीनता, सादगी, देशप्रेम, सहनशीलता, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रुचि और सबके लिए सम्मान की भावना विकसित हुई है। यहां पर सभी बच्चों को समान समझा जाता है, चाहे वे किसी भी धर्म एवं सम्प्रदाय के हो। सभी आचार्यगणों, खासकर प्रधानाचार्य जी का बहुत-बहुत आभार, जो नोएडा जैसे शहर में इस स्कूल के माध्यम से कई बच्चों को संस्कारित और शिक्षित कर रहे हैं।

**विनीता सिंह**

**दिवंपा- 5 F**

---

सरस्वती शिशु मंदिर में मेरा अनुभव बहुत अच्छा रहा । इस विद्यालय के सभी शिक्षक और शिक्षिकाएं बहुत अच्छे हैं। वे बच्चों को प्यार से पढ़ते हैं और उनकी मदद भी करते हैं। यहां के बच्चों को नई-नई बातें सीखने को मिलती हैं। इस विद्यालय में अनुशासन पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

बच्चों को पढ़ने के साथ-साथ खेलकूद और अन्य गतिविधियों में भाग लेने का मौका मिलता है। यहां के सभी शिक्षक बहुत अनुभवी हैं। विद्यालय में शिक्षकों और शिक्षकों से उनका तालमेल बहुत अच्छा है। जिसकी मदद से बच्चों को कुछ नया सीखने की चाहत बढ़ती है। वह हमेशा सीखने के लिए प्रोत्साहित रहते हैं।

शिक्षकों के नए-नए तरीके जैसे श्रुतलेख व छोटी - छोटी प्रतियोगिताएं बच्चों को गलती न करने के लिए प्रेरणा देती हैं। यह सब अनुभवी शिक्षाकों के कारण ही संभव हो सका है। मुझे गर्व है कि मैंने अपने बच्चों का एडमिशन यहां कराया।

**कविता**

**अमात्य- 5 F**

# लेख (उत्सव, जयन्ती व दिवस)

## विश्व श्रमिक दिवस

विश्व श्रमिक दिवस 1 मई को कई देशों में मनाया जाता है । यह दिन मजदूर और श्रमिकों को समर्पित है । दुनिया भर के श्रमिक जीवित रहने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। एक विशेष दिन उनकी मेहनत के लिए निर्धारित किया गया है । अधिकांश देशों में 1 मई को श्रम दिवस के रूप में चिन्हित किया गया है ।

इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य देश के निर्माण में श्रमिकों के योगदान को याद करना और सम्मानित करना है । इस दिन श्रमिकों के संघर्षों को याद किया जाता है, और उनके काम की सराहना की जाती है। साथ ही इस दिन को मनाने के पीछे का एक उद्देश्य मजदूरों के अधिकारों की रक्षा करना और इसके प्रति उन्हें जागरूक करना भी है । हर साल अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस की एक खास थीम चुनी जाती है । इस साल की थीम है ' **Ensuring workplace safety and health amidst climate change .**

यानी जलवायु परिवर्तन के बीच काम की जगह पर श्रमिकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को सुनिश्चित करना इस थीम के जरिए श्रमिकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को महत्व देने पर जोर दिया गया है। भारत में श्रम कानून को सरल बनाने के लिए सरकार ने 29 अलग-अलग श्रम संबंधी विनियमों को चार संहिताओं में मिला दिया है । वेतन संहिता, सामाजिक सुरक्षा संहिता,व्यावसायिक सुरक्षा स्वास्थ्य और कार्य स्थिति संहिता तथा औद्योगिक संबंध संहिता ।

फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट के अनुसार ' किसी कारोबार को ऐसे देश में जारी रहने का अधिकार नहीं है, जो अपने श्रमिकों को जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक मजदूरी से भी कम मजदूरी पर काम करवाता हो ' ।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर श्रमिक दिवस बड़े धूमधाम और उत्साह से मनाया जाता है, बल्कि श्रमिकों का सम्मान भी किया जाता है । श्रमिक दिवस पूंजीपति वर्गों द्वारा मजदूरों की शोषण से मुक्ति का प्रतीक है । श्रमिक दिवस एक अनुस्मारक है कि हर बार सच्चाई की जीत होती है ।

अरुणिमा श्रीवास्तव (आचार्या)
स.शि.म. ,नोएडा

# रविन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती

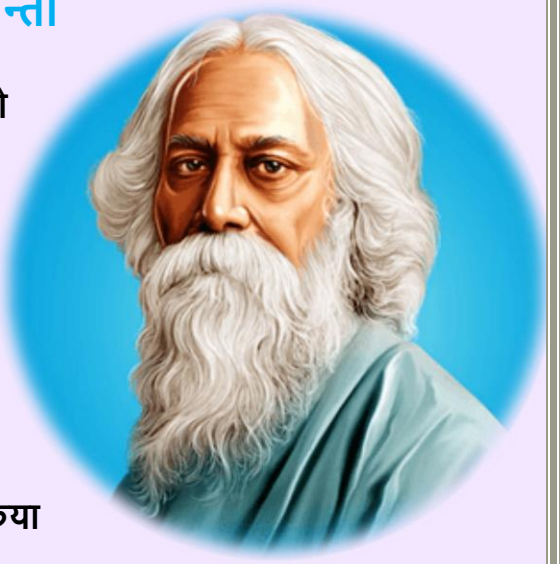

रविंद्र नाथ टैगोर का जन्म 07 मई 1861 को कोलकाता भारत में हुआ था। उनके पिता का नाम देवेंद्र नाथ टैगोर और माता का नाम शारदा देवी था । अमीर जमींदार और समाज सुधारक द्वारकानाथ टैगोर उनके दादा थे। ब्रह्मो समाज 19वीं सदी के बंगाल में एक क्रांतिकारी धार्मिक आंदोलन था।जिसने उपनिषदों में उल्लिखित हिंदू धर्म के सर्वोच्च अद्वैतवादी आधार को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया था जिसका नेतृत्व उनके पिता देवेंद्र नाथ टैगोर ने किया था।

टैगोर परिवार हर पेशे में योग्यता की खान था। साहित्यिक पत्रिका प्रकाशनों की मेंजबानी के अलावा वे अक्सर थिएटर प्रदर्शन और बंगाली और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुतियां देते थे। टैगोर के बड़े भाई द्विजेंद्रनाथ कवि और दार्शनिक थे। अखिल यूरोपीय भारतीय सिविल सेवा में नियुक्त होने वाले पहले भारतीय सत्येंद्र नाथ थे। उनके दूसरे भाई ज्योतिंद्रनाथ एक लेखक संगीतकार और संगीतज्ञ थे। उनकी बहन स्वर्ण कुमारी ने उपन्यास प्रकाशित किए।

रविंद्र नाथ टैगोर ने शांति निकेतन में जिस अविश्वसनीय रूप से अद्वितीय और असाधारण संस्थान की स्थापना की थी। जिसका नाम विश्व भारती विश्वविद्यालय था। उसके छात्रों ने उन्हें सम्मान के कारण गुरुदेव की उपाधि दी।

रविंद्रनाथ टैगोर ने अपने पूरे जीवन काल में कई कविताएं उपन्यास और लघु कथाएं लिखी। हालांकि उन्होंने कम उम्र में ही लिखना शुरू कर दिया था। लेकिन अपनी पत्नी और बच्चों को खोने के बाद उनकी और भी रचनात्मक रचनाएं करने की महत्वाकांक्षा और बढ़ गई। रविंद्र नाथ टैगोर ने कई पुरस्कार जीते उन्होंने 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार जीता वह एकमात्र कवि है। जिसकी दो रचनाएं दो देशों का राष्ट्रगान बनी।

भारत का राष्ट्रगान - जन गण मन और बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान- आमार सोनार बांड्ला- गुरुदेव की ही रचनाएं हैं।

राखी (आचार्या)
स.शि.म. ,नोएडा

# महाराणा प्रताप जयन्ती

महाराणा प्रताप एक महान राजा तथा वीर योद्धा थे। उनका जन्म 9 मई 1540 को को को राजस्थान के कुम्भलगढ़ में हुआ था। उनके पिता का नाम उदय सिंह तथा माता का नाम जयवंत बाई था। वह बचपन से ही अपने दादा राणा सांगा की तरह युद्ध कला तथा घुड़सवारी में निपुण थे।

1576 में महाणा प्रताप तथा मुगल शासक अकबर के बीच हल्दी घाटी का युद्ध हुआ था। महाराणा प्रताप ने अकबर की अधीनता कभी स्वीकार नहीं कि।महाराणा प्रताप ने अपने जीवनकाल में कई युद्ध लड़े, जिनमें मुगलों और अन्य विरोधियों के खिलाफ़ 20 से अधिक प्रमुख युद्ध दर्ज हैं।

सम्राट अकबर की सेनाओं के खिलाफ़ उनके अथक प्रतिरोध ने मेवाड़ की संप्रभुता की रक्षा के लिए उनके दृढ़ संकल्प को प्रदर्शित किया। महाराणा प्रताप की गुरिल्ला युद्ध रणनीति, इलाके का ज्ञान और अपने राज्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता ने उन्हें मेवाड़ के अधिकांश हिस्से को पुनः प्राप्त करने में मदद की। उनके सैन्य अभियानों को शक्तिशाली विरोधियों के खिलाफ़ रणनीतिक प्रतिभा और साहस के उदाहरण के रूप में याद किया जाता है।

महाराणा प्रताप का सबसे प्रिय घोड़ा चेतक था। चेतक महाराणा प्रताप के साथ हमेशा होता तथा एक बहादुर घोड़ा था। चेतक एक युद्ध के दौरान महाराणा प्रताप को बचाते हुए मारा गया था। महाराणा प्रताप 72 किलोग्राम का कवच पहन कर 81 किलोग्राम ग्राम के भाले से युद्ध किया करते थे ।

महाराणा प्रताप युद्ध पर जाने से पहले वह 208 किलों की दो तलवारें रखते थे। महाराणा प्रताप एक सच्चे देशभक्त थे। उनकी मृत्यु 19 जनवरी 1597 को हुई थी। वह हमारे लिए एक प्रेरणा का स्रोत हैं। अपनी वीरता, शौर्य, त्याग, पराक्रम तथा दृढ़ निश्चय के कारण उन्हें युगों- युगों तक याद किया जायेगा एवं वह हमारे दिलों में सदा अमर रहेंगे।

चेतना दुबे (आचार्या)
स.शि.म. ,नोएडा

# राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

## प्रस्तावना

भारत विविधताओं से भरा एक प्राचीन देश है जिसकी जड़ें वैज्ञानिक सोच और नवाचार में सदियों से समृद्ध रही हैं। वर्तमान युग को तकनीकी युग कहा जाता है और इसमें किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसकी तकनीकी प्रगति पर निर्भर करती है। भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं और यह प्रगति केवल वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, तकनीकी विशेषज्ञों और सरकार के सहयोग से ही संभव हुई है। भारत सरकार ने इन उपलब्धियों के सम्मान में हर वर्ष 11 मई को 'राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की।।यह दिन न केवल भारत की तकनीकी और वैज्ञानिक क्षमता का प्रतीक है, बल्कि यह देशवासियों को यह भी याद दिलाता है कि वैज्ञानिक विकास देश की सुरक्षा, आत्मनिर्भरता और सतत विकास के लिए कितना महत्वपूर्ण है।

## राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का इतिहास

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पहली बार 1999 में मनाया गया था। इसकी शुरुआत तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार द्वारा की गई थी। इसके पीछे मुख्य कारण था 11 मई 1998 को भारत द्वारा राजस्थान के पोखरण में किए गए सफल परमाणु परीक्षण – जिसे 'ऑपरेशन शक्ति' के नाम से जाना जाता है। इसके साथ ही यह दिन भारत की तीन बड़ी तकनीकी उपलब्धियों से भी जुड़ा है:

पोखरण परमाणु परीक्षण (Operation Shakti-1)
हंसा-3 विमान की सफल उड़ान
त्रिशूल मिसाइल का सफल परीक्षण

इन घटनाओं ने वैश्विक मंच पर भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमता को स्थापित किया। इसीलिए, 11 मई को 'राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस' घोषित किया गया ताकि यह दिन तकनीकी नवाचार, अनुसंधान और वैज्ञानिक उपलब्धियों को याद करने का प्रतीक बन सके।

## प्रमुख तकनीकी उपलब्धियाँ

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का उद्देश्य सिर्फ अतीत की उपलब्धियों का उत्सव मनाना नहीं है, बल्कि यह भविष्य के लिए प्रेरणा लेने का भी एक जरिया है। भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है:

1. अंतरिक्ष
2. स्वदेशी मिसाइल प्रणाली
3. डिजिटल इंडिया और तकनीकी सशक्तिकरण
4. बायोटेक्नोलॉजी और मेडटेक

कोविड-19 महामारी के दौरान भारत ने कोवैक्सिन और कोविशील्ड जैसे टीकों का निर्माण कर यह सिद्ध कर दिया कि हम स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर हैं।

## राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का महत्व

1. वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना

यह दिन विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और युवा वैज्ञानिकों को अनुसंधान व नवाचार की दिशा में प्रोत्साहित करता है।

2. प्रेरणा का स्रोत

यह दिवस डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिकों के जीवन से प्रेरणा लेने और उनके योगदान को याद करने का दिन है।

3. तकनीकी जागरूकता

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस तकनीक को आम जनता के जीवन से जोड़ने का माध्यम है। इसके जरिए तकनीक के सामाजिक और आर्थिक प्रभावों को समझने में मदद मिलती है।

4. सरकारी नीतियों को प्रोत्साहन

इस दिन पर आयोजित कार्यक्रमों से यह भी सुनिश्चित होता है कि सरकार और नीति-निर्माता विज्ञान और तकनीक को प्राथमिकता दें।

## कैसे मनाया जाता है राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस?

देश भर में विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों, विश्वविद्यालयों, स्कूलों और तकनीकी संस्थानों द्वारा इस दिन को उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। प्रमुख गतिविधियाँ:-- वैज्ञानिक सम्मेलन ,सेमिनार,तकनीकी प्रदर्शनी औरनवाचारमेलें
युवा वैज्ञानिक पुरस्कार वितरण,शोध पत्र प्रस्तुतियाँ
प्रदर्शनी और जागरूकता अभियान,वेबिनार और वर्चुअल मीटिंग्स
भारत सरकार द्वारा उत्कृष्ट वैज्ञानिक उपलब्धियों और नवाचारों को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

## तकनीक और आत्मनिर्भर भारत

आज भारत 'आत्मनिर्भर भारत' (Aatmanirbhar Bharat) की ओर बढ़ रहा है। इस संकल्प को पूरा करने के लिए तकनीकी विकास अत्यंत आवश्यक है। कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, रक्षा, ऊर्जा, और पर्यावरण जैसे सभी क्षेत्रों में तकनीक की भूमिका निर्णायक है। मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया, और स्किल इंडिया जैसे अभियानों के जरिए भारत वैश्विक स्तर पर अपनी तकनीकी पहचान बना रहा है।

## भविष्य की दिशा

भारत की युवा जनसंख्या, तकनीकी संसाधन, और नवाचार की संस्कृति देश को वैश्विक तकनीकी महाशक्ति बना सकती है। इसके लिए ज़रूरी है कि:
विज्ञान शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाए
शोध एवं नवाचार को समर्थन मिले
स्टार्टअप्स को निवेश और मार्गदर्शन मिले
तकनीकी संस्थानों को आधुनिक संसाधनों से युक्त किया जाए
ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच तकनीकी अंतर को पाटा जाए

## उपसंहार

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस केवल एक दिन नहीं, बल्कि एक प्रेरणा है – नवाचार, विज्ञान और आत्मनिर्भरता की। यह हमें यह याद दिलाता है कि कैसे तकनीक किसी राष्ट्र को आत्मनिर्भर और समृद्ध बना सकती है। इस दिवस के माध्यम से हर भारतीय को यह समझना चाहिए कि तकनीक केवल मशीन नहीं, बल्कि बदलाव का एक सशक्त माध्यम है – एक ऐसा माध्यम जो जीवन की गुणवत्ता, देश की सुरक्षा और समाज के विकास को सुनिश्चित करता है।

धर्मेंद्र (आचार्य)
स.शि.म. ,नोएडा

# वीर सावरकर जयन्ती

**हम संघर्ष की तपती धरा से बचने के लिए, शीतल युक्त मार्ग चुनते हैं,**

**यही हमें पतन के मार्ग तक पहुंचाती है।**

विनायक दामोदर सावरकर भारत के महान क्रांतिकारी थे। इनका जन्म 28 मई 1883 को महाराष्ट्र के नासिक शहर के पास भगूर गांव में दामोदर सावरकर और राधाबाई सावरकर के यहां एक मराठी हिंदू परिवार में हुआ था।सावरकर ने एक हाई स्कूल के छात्र के रूप में अपनी सक्रियता शुरू की।इन्होंने एक समिति बनाई थी जो 'मित्र मेला' के नाम से जानी गई। सावरकर ने पुणे के फर्ग्यूसन कॉलेज में एक छात्र के रूप में अपनी सक्रियता जारी रखी। सावरकर राष्ट्रवादी नेता लोकमान्य तिलक से बहुत प्रभावित थे।1905 के बंगाल विभाजन के विरोध में सावरकर ने बाल गंगाधर तिलक की उपस्थिति में अन्य छात्रों के साथ भारत में विदेशी कपड़ों की होली जलाई।

युवा छात्र सावरकर से प्रभावित होकर लोकमान्य तिलक ने लंदन में कानून की पढ़ाई के लिए 1906 में इन्हें शिवाजी छात्रवृत्ति दिलाने में मदद की।लंदन में सावरकर 'इंडिया हाउस' और 'फ्री इंडिया सोसाइटी' जैसे संगठनों से जुड़ गए।उन्होंने क्रांतिकारी तरीकों से पूर्ण भारतीय स्वतंत्रता की वकालत करने वाली किताबें भी प्रकाशित की। 1857 के भारतीय विद्रोह के बारे में उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में से एक 'द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस'को ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों ने प्रतिबंधित कर दिया था।

1910 में सावरकर को ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार कर लिया और इंडिया हाउस से उनके संबंधों के कारण उन्हें भारत प्रत्यर्पित करने का आदेश दिया गया।नासिक षड्यंत्र मामले में उन पर मुकदमा चलाया और उन्हें अंडमान द्वीप की कुख्यात सेल्यूलर जेल में ले जाया गया और आजीवन कारावास की सजा सुनाई। दुनिया के वे ऐसे पहले कवि थे जिन्होंने अंडमान के एकांत कारावास में जेल की दीवारों पर कील और कोयले से कविताएं लिखी और फिर उन्हें याद किया। इस प्रकार याद की हुई 10,000 पंक्तियों को उन्होंने जेल से छूटने के बाद पुनः लिखा।

वीर सावरकर एक प्रखर राष्ट्रवादी नेता थे। वह विश्व भर के क्रांतिकारियों में अद्वितीय थे। उनका नाम ही भारतीय क्रांतिकारियों के लिए उनका संदेश था। उनकी पुस्तकें क्रांतिकारियों के लिए गीता के समान थी। उनका जीवन बहु-आयामी था।

रजनी (आचार्या)

स.शि.म. ,नोएडा

# अहिल्याबाई जयन्ती

अहिल्याबाई होलकर का जन्म 31 मई 1725 ईस्वी को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंड़ी गांव में एक मराठी हिन्दू परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम मनकोजी शिंदे था। माता का नाम सुशीला बाई शिंदे था। बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की अहिल्याबाई को माता-पिता ने प्रारंभिक शिक्षा के साथ ही उत्तम संस्कार भी दिए थे। उनकी माता उन्हें बचपन से ही पौराणिक कथा ऐतिहासिक कथाएं सुनती थी उन्हें कथा प्रवचन सुनने प्रतिदिन मंदिर ले जाती थी यही कारण था कि अहिल्याबाई बचपन से ही धर्म परायण हो गई थी। अहिल्या बाई का विवाह खंडेराव होलकर से हुआ था जो मराठा साम्राज्य के एक प्रमुख सेनापति थे।उनके पति की मृत्यु के बाद अहिल्याबाई ने अपने राज्य की बागडोर संभाली और एक शक्तिशाली शासक के रूप में उभरी। सन् 1745 में देपालपुर में अहिल्याबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम मालेराव रखा गया। तीन वर्ष बाद 1748 में उन्होंने एक पुत्री मुक्ताबाई को जन्म दिया। सन् 1754 में कुंभेरी के किले पर राजा सूरजमल जाट के विरुद्ध युद्ध के दौरान 24 मार्च 1754 को तोप का गोला लगने से खंडेराव वीरगति को प्राप्त हुए। अहिल्याबाई के ससुर मल्हाराव और सासू मां गौतमी भाई ने उनकी शिक्षा दीक्षा और पठन-पाठन का विशेष ध्यान रखी थी।अहिल्याबाई होल्कर ने अपने कार्यकाल में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की है—

**सैन्य अभियान**-अहिल्याबाई होलकर ने कई सैन्य अभियानों का नेतृत्व किया और अपने राज की सीमाओं का विस्तार किया।

**प्रशासनिक सुधार**-अहिल्याबाई होलकर ने अपने राज्य में प्रशासनिक सुधार किया और न्याय प्रणाली को मजबूत किया।

**आर्थिक विकास**-अहिल्याबाई ने अपने राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए जैसे व्यापार और उद्योगों को बढ़ावा देना।

**सांस्कृतिक योगदान**-रानी अहिल्याबाई ने कई मंदिरों धर्मशालाओं और सड़कों का निर्माण करवाया और कला और संस्कृति को बढ़ावा दिया। अहिल्याबाई होलकर की विरासत आज भी जीवित है उन्हें एक महान शासक और एक सच्चे नेता के रूप में याद किया जाता है जिन्होंने अपने राज्य और लोगों के लिए बहुत कुछ किया उनकी कहानी आज भी प्रेरणा का स्रोत है और उनकी उपलब्धियां को हमेशा याद रखा जाएगा।

अहिल्याबाई ने अपना संपूर्ण राज्य भगवान शिव को समर्पित कर दिया था वह शिव की प्रतिनिधि के रूप में शासन का संचालन करती थी राजकाज के समय हमेशा शिवलिंग को अपने साथ में धारण करती थी उनके राज के सारे शासकीय आदेश भगवान शिव शंकर आदेश के नाम से ही जारी होते थे उनके आदर्श शासन जनहितकारी नीतियों के कारण प्रजाजन उनके जीवन काल में ही उन्हें देवी के रूप में मानने लगे थे । 13 अगस्त 1795 को महेश्वर में 70 वर्ष की आयु में उनका निवार्ण हुआ ।

# महावीर जयन्ती

विद्यालय में दिनांक- 9 अप्रैल 2025 को महावीर जयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर आचार्य हरिओम जी व आचार्या बहन प्रीति जी ने दीप प्रज्जवलित और पुष्पार्चन किया तथा महावीर जी का जीवन परिचय कराया।

# अम्बेडकर जयन्ती

दिनांक- 11 अप्रैल 2025 को अम्बेडकर जयन्ती मनाई गई विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान देवेन्द्र कुमार शर्मा जी ने व श्रीमती अल्का सक्सेना जी ने दीप प्रज्जवलित और पुष्पार्चन अम्बेडकर जी का जीवन परिचय कराया।

# आचार्य -अभिभावक गोष्ठी

**विद्यालय में दिनांक- 12 अप्रैल  2025 को संपन्न हुई आचार्य-अभिभावक गोष्ठी के छायाचित्र।**

# अभिभावक प्रबोधन कार्यक्रम

**आज दि०-19/04/2025 दिन शानिवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा की शिशु वाटिका में अभिभावक प्रबोधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य तिरमल जी व शिशु वाटिका की दीदियों के सानिध्य में संपन्न हुआ। जिसमें अभिभावकों की संख्या 140 रही। प्रबोधन से संबंधित छायाचित्र.....**

# विश्व पुस्तक दिवस

**आज दि०- 23/04/2025 दिन-बुधवार को विश्व पुस्तक दिवस के उपलक्ष में विद्यालय की पुस्तकालय में पुस्तक पढ़ते भैया/बहिनों के छायाचित्र....**

# परशुराम जयंती

विद्यालय में दिनांक- 29 अप्रैल 2025 को परशुराम जयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर आचार्य महेंद्र पाल जी व नेहा जी ने दीप प्रज्जवलित और पुष्पार्चन किया तथा परशुराम जी का जीवन परिचय कराया।उन्होंने बताया कि भगवान परशुराम, भगवान विष्णु के छठे अवतार हैं और यह भगवान शिव के परम भक्त माने जाते है. भगवान परशुराम का जन्म माता रेणुका और ऋषि जमदग्नि के घर प्रदोष काल में हुआ था उन्हें चिरंजीवी भी माना गया है. वह अपने माता-पिता के आज्ञाकारी पुत्र थे।

# स्विमिंग डे

**दिनांक – 23, 24, 25/4/2025 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के शिशु वाटिका में पंचतत्व (जल) का अनुभव करते हुए कक्षा – अरुण (NUR.), उदय (LKG), प्रभात (UKG) के भैया/बहिन। तरण-ताल में भैया/बहिनों को कई तरह की गतिविधियाँ कराई गई, जिनमें मुख्य रूप से पानी में खेलना, तैरना, और बुनियादी कौशल सीखना शामिल है। इन गतिविधियों का उद्देश्य भैया/ बहिनों को पानी में सहज बनाना, उनकी मोटर स्किल्स को विकसित करना, बच्चों के अंदर पानी से डर दूर करना और उन्हें पानी से संबंधित बुनियादी ज्ञान देना है।**

# जन्मोत्सव हवन

**दिनांक-29/04/2025 दिन- मंगलवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में अप्रैल माह में जन्मे कक्षा अरुण से पंचम तक के सभी भैया/बहिनों की दीर्घायु के लिए जन्मोत्सव कार्यक्रम में अग्निहोत्र करते यजमान चंदन गुप्ता, स्वाति, राजेंद्र मेहरा, ममता मेहरा तथा विद्यालय की आचार्य दीदी,अभिभावक बन्धु/भगिनी.....**

# पत्रिका प्रश्नोत्तरी

1. विश्व श्रमिक दिवस कब मनाया जाता है ?

2. रवींद्रनाथ टैगोर के माता पिता का क्या नाम था ?

3. भारत के राष्ट्रीय गान के रचयिता का नाम बताइए।

4. महाराणा प्रताप का जन्म कब हुआ था ?

5. महाराणा प्रताप के प्रिय घोड़े का क्या नाम था ?

6. राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस कब मनाया जाता है ?

7. वीर सावरकर का जन्म कब हुआ ?

8. अहिल्याबाई होल्कर का जन्म कब हुआ था ?

9. अहिल्याबाई होलकर के पति का क्या नाम था ?

10. भगवान विष्णु जी के छठवें अवतार कौन थे ?

11. भगवान परशुराम जी के माता पिता का नाम बताइए।

12. वीर सावरकर को किस जेल में रखा गया था ?

# वर्ग पहेली

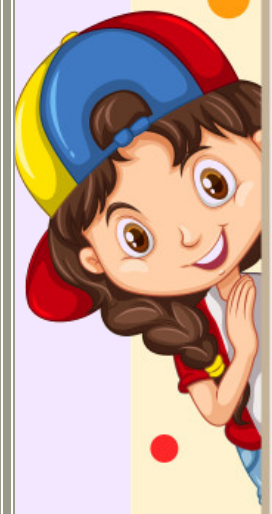

नीचे दी गई वर्ग पहेली में रंगों के नाम ढूँढ़कर गोला लगाओ –

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज्ञ | स | टा | र्ट | क्ष | ता | पा | पी | दो | म |
| ना | रं | गी | मै | त्र | तू | गु | ला | बी | र |
| य | मै | र | उ | सा | ख | स | त | ई | गा |
| अ | पां | बैं | ग | नी | घ | म | म | छ | चा |
| उ | आ | रू | ब | ला | ल | ऊ | ल | वा | र |
| र | ठ | टा | ती | बा | रू | ल | द | च | ग |
| स | त्र | या | ह | जा | ज | अ | ग | म | ब |
| सु | न | ह | रा | ए | ता | चा | र | की | र |
| झ | ई | स | मा | क | श | नौ | द | ला | सा |
| भू | रा | छ | सी | भ | ऊ | वा | न | य | त |

नारंगी, बैंगनी, गुलाबी, लाल, सुनहरा, काला, चमकीला, हरा, नीला, पीला, भूरा

**आलोक-** **उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक के लेखों में विद्यमान है अतः इसी अंक के उत्तर मान्य होंगे।**

**कक्षा- द्वितीय से पञ्चम तक के सभी भैया/बहिनों को ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 30 व 31 में दिए प्रश्नों के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 10 मई 2025 तक भेजने होंगे।**